❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तवेद्धि सख्यमस्तृतम्।
ऋग्वेद 1/15/5
हे प्रभो! आपकी मित्रता अटूट और अमृत है।
O Lord !
your friendship is ever lasting and divine.

वर्ष 40, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 जनवरी, 2017 से रविवार 15 जनवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

9 दिवसीय वैदिक साहित्य प्रचार प्रसार यज्ञ का शुभारम्भ

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को प्रत्येक पुस्तक प्रेमी तक पहुंचाने का प्रयास

स्वाध्याय के लिए प्रत्येक हिन्दू घर में होना चाहिए वेद एवं वैदिक साहित्य – महाशय धर्मपाल

संस्कारों के प्रचार के लिए बच्चों व युवाओं पर करें ध्यान केन्द्रित – आनन्द कुमार चौहान

हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू की पुस्तक के साथ ऑडियो में भी उपलब्ध है सत्यार्थ प्रकाश

पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य प्रचार प्रचार स्टाल का शुभारम्भ करते महाशय धर्मपाल जी, श्री आनन्द चौहान जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी एवं इस अवसर पर उपस्थित महानुभाव। भव्य तरीके से सुसज्जित हिन्दी साहित्य प्रचार स्टाल।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में पहली बार

मनुस्मृति पर विशेष चर्चा

रविवार 15 जनवरी, 2017 समय : सायं 4-5 बजे
स्थान : साहित्य मंच, हॉल नं. 8, प्रगति मैदान, नई दिल्ली
अध्यक्षता : श्री धर्मपाल आर्य वक्ता : डॉ. विवेक आर्य
विशुद्ध मनुस्मृति को जानने और इसके विषय में व्याप्त भ्रान्तियों से मुक्ति पाने के लिए आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

15 जनवरी, 2017 तक चलेगा प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेला

हिन्दी : हॉल नं. 12ए स्टाल : 267-276

अंग्रेजी साहित्य हॉल नं. 18 स्टाल : 304

20 रुपये की विशेष सब्सिडी के साथ हिन्दी सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रुपये एवं उर्दू सत्यार्थ प्रकाश मात्र 70 रुपये में

सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900 एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री अनिरुद्ध आर्य मो. 9540040339 अथवा श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाती रहेगी।

सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। *– महामन्त्री*

17वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन : रविवार 22 जनवरी, 2017 : प्रातः 10 से 2 बजे

आयोजन स्थल : आर्यसमाज अशोक विहार-1, दिल्ली-110052

सभी प्रतिभागी स्वयं माता-पिता के साथ पधारें। आयोजन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था की जाएगी। समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि अपने विवाह योग्य बच्चों के साथ पधारें। – अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक एस. पी. सिंह, संयोजक (9540040324)

वेद-स्वाध्याय

अन्तर की वाणी

शिवास्त एका आशिवास्त एकाः सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः।
तिस्त्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन् तासामेका वि पपातानु घोषम्।। -अथर्व. 7/43/1
ऋषिः **प्रस्कण्वः।।** देवताः **वाक्।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ-हे मनुष्य! **ते**=तेरी **एकाः**= एक **शिवाः**=कल्याणकारिणी वाणियाँ हैं **ते एकाः अशिवाः**= और एक अकल्याण कारिणी हैं, पर तू **सर्वाः**=उन सबको **सुमनस्यमानः**=प्रसन्नचित्त से **बिभर्षि**= धारण करता है। वाणी के **तिस्त्रः वाचः**=तीन भाग **अस्मिन् अन्तः निहिता**= तेरे इस देह के अन्दर छिपे रखे हैं **तासां एकाः**=उनका एक हिस्सा ही **घोषं अनु**=शब्द व आवाज के रूप में **विपपात**= बाहर निकलता है।

विनय- हे मनुष्य! तू जो वाणियाँ बोला करता है, उनमें कुछ तेरा कल्याण करनेवाली होती हैं और कुछ अकल्याण करनेवाली। जो वाणियाँ सच्ची और प्यारी होती हैं, जो दूसरे के हित के लिए, लाभ पहुँचाने के लिए, सत्य फैलाने के लिए बोली जाती हैं वे कल्याणकारिणी होती हैं और जिन वाणियों को तू छल-कपटपूर्वक, द्वेष व क्रोध के साथ, दूसरे को हानि पहुँचाने के लिए बोलता है उनसे तेरा भारी अकल्याण होता है, पर तू वाणियों के इस महान् भेद को न समझता हुआ इन सब प्रकार की वाणियों को बोलता जाता है-अच्छी-बुरी दोनों वाणियों को एक ही प्रकार प्रसन्नतापूर्वक बेखटके बोलता जाता है। तू शायद समझता है कि तेरे बोले हुए शब्दों का जो उसी समय नष्ट होते दीखते हैं, तुझपर कुछ प्रभाव नहीं होता या नहीं हो सकता, परन्तु तुझे पता नहीं कि तू वाणी को केवल बोलता नहीं है, किन्तु उसे धारण भी करता है। तू जो शब्दरूप में बोलता है वह तो वाणी का एक भाग (एक-चौथाई भाग) है; उस वाणी के शेष तीन भाग तो तेरे अन्दर छिपे हुए पड़े होते हैं, तुझमें रखे हुए होते हैं। जो अभिप्राय तू शब्दों में (इस चौथी वैखरी वाणी में) बोलता है, वह अभिप्राय तेरे मन में (तीसरी मध्यमा वाणी के रूप में) समाया रहता है और मन में बोले जाने से भी पूर्व वह अभिप्राय तेरे अन्दर साकार व निराकार ज्ञान के रूप में रहता है (जिन्हें कि क्रमशः दूसरी और पहली, पश्यन्ती और परा वाणी कहते हैं)। एवं, तेरी अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की वाणी तेरे अन्दर अपने तीन पाद रखे रहती है और चौथे पाद में वह बाहर शब्दरूप में दीखती है। यह शब्दरूप चौथाई वाणी चाहे तुझे अपने पर कुछ असर कर सकनेवाली न दीखती हो, परन्तु वाणी के इस समूचे रूप पर-वाणी के अन्दर के इन तीनों रूपों पर-जब भी तू ध्यान देगा तो तुझे दीखेगा कि सच्ची कल्याणकारिणी वाणी तुझमें परा, पश्यन्ती और मध्यमारूप में ठहरी हुई तुझपर कितना कल्याणकारी प्रभाव कर रही है और बुरे अभिप्राय से परा, पश्यन्ती और मध्यमारूप में धारण की हुई अकल्याणकारिणी वाणी अन्दर-ही-अन्दर से तेरा कितना भारी अकल्याण कर रही है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में आर्यसमाज क्यों?

कई रोज पहले की बात है कई लड़कियां बस में जा रही थीं आपस में चर्च और ईसाइयत की महानता का बखान कर रही थीं। मैंने स्वभाववश पूछ लिया, ''बहन आप हिन्दू धर्म को भी जानो पढो, संसार में इससे महान कोई सभ्यता और धर्म नहीं है।'' उनमें से एक बोली ''कौन से धर्म की बात कर रहे हो भईया।'' आसाराम वाला, राधे माँ वाला, संत रामपाल या नित्यानद वाला? यह प्रश्न शूल की तरह मेरे हृदय में चुभा। हालाँकि आर्य युवक अपने तर्कों से अपनी क्षमता का परिचय देने में समर्थ हैं पर गलती उन भोली-भाली लड़कियों की नहीं थी। गलती हमारी है क्योंकि बच्चों को जो दिया जाता है वही वापस मिलता है। जब हम बच्चों को कीर्तन जागरण पर नाच कूद और तथाकथित ढोंगी बाबाओं के पाखंड देंगे तो बदले में हमें यही जवाब मिलेगें। वह समझेंगे शायद यही धर्म है। क्योंकि हमेशा से समाज में धर्म जीवन के हर पहलू को प्रभावित करता है जब तक हम बच्चों को वैदिक सभ्यता का वातावरण नहीं देंगे या कुछ ऐसा नहीं देंगे कि उनमें संस्कार पनपे तब तक बच्चे माता-पिता का तिरस्कार करेंगे। चर्च की महानता का जिक्र करेंगे, कुरान का पाठ करेंगे, धर्मांतरण करेंगे। यदि आज आधुनिक शिक्षा के साथ वैदिक संस्कार मिले तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ आज भी राम, दशरत के कहने पर महल त्याग देगा। वरना तो वृद्ध आश्रम के द्वार दशरत का स्वागत करेंगे।

आज सवाल यह है कि क्या सबके पास आर्ष साहित्य है? नई पीढ़ी को भ्रष्ट होने से बचाने के लिए क्या सबके पास तर्कों की कसोटी पर खरी उतरने वाली विश्व की एक मात्र पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश है? आखिर हम इन छोटी-छोटी अल्प मूल्य की पुस्तकें भी अपने घरों में क्यों नहीं रख पाए? क्या अगली पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का कार्य हमारा नहीं है? अपने बच्चे उनके कोमल मन पर हम वैदिक सभ्यता की छाप छोड़ने में पीछे क्यों हैं? मैं उन्हें साधू संत बनाने की नहीं कह रहा बस इतना कहना चाहता हूं कि वे आपकी सेवा करें और आगे एक बेहतर समाज की स्थापना करें। कुछ दिन पहले की बात है मेट्रो के अन्दर मैंने एक बुजुर्ग को कहते सुना कि आजकल के बच्चे मेट्रो के अन्दर दिए जाने वाले दिशा-निर्देशों का सही से पालन नहीं करते। फिर वह खुद ही बोल उठा, ''जो माँ-बाप की नहीं सुनते वह मेट्रो अनाउंसर की कैसे सुनेंगे? यह वह दुख है जो आज हर माँ-बाप किसी न किसी रूप में अपने अन्तस् में महसूस कर रहा है।

ऐसा नहीं है सब लोग धर्म से विमुख हैं। बस यह सोचते हैं क्या होगा वेद पढ़ने से, क्या हासिल होगा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से! ये सब पुरानी बातें हैं आज आधुनिक जमाना है ये सब चीजें कोई मायने नहीं रखतीं आदि सवालों से अपने मन को बहला लेते हैं पर जब हम जरा सा भी दुखी होते हैं तब सबसे पहले ईश्वर याद आता है। अच्छा आज अपनी आत्मा से एक छोटे से सवाल का जवाब देना बिल्कुल निष्पक्ष होकर और यह सवाल किसी एक से नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवजाति से है, ''क्या अपने अस्तित्व का बोद्ध करना पाप है? क्या सत्य-असत्य को जानना, न्याय-अन्याय को जानना, तर्क संगत ठहराना अनुचित है? आखिर हमारा जन्म क्यों हुआ? दो जून का भोजन सैर सपाटा तो जानवर भी कर लेते हैं या फिर सिर्फ इसलिए कि हम बस मोबाईल पर गेम खेलें या अपने घर परिवार तक सीमित रहे? जिस महान सभ्यता में वैदिक भूमि में हमारा जन्म हुआ क्या हम पर उत्तरदायित्व नहीं है कि इसका स्वरूप बिना बिगाड़े हम अगली पीढ़ी के हाथ में इसे सौंपने का कार्य करें?

अक्सर बातों-बातों में यह सुना जाता है कि अब जमाना पहले जैसा नहीं रहा न बच्चों में संस्कार बचे न मर्यादा पर कभी किसी ने सोचा है इसके जिम्मेदार कौन है जरा सोचिये जब हमें जमाना और संस्कार ठीक मिला था जिसका हम अक्सर जिक्र करते हैं तो उसका वर्तमान में स्वरूप क्यों बिगड़ा? क्या दो चार घंटे कीर्तन-जागरण कर या गाड़ी में दो भजन चला लेना धर्म है? नहीं वह मनोरंजन हो सकता है लेकिन धर्म नहीं! प्रत्येक परिवार जिसमें 4 लोग हैं औसतन हर महीने 500 या 700 रुपये का इन्टनेट डाटा इस्तेमाल कर लेते हैं। मैं यह नहीं कह रहा वह क्यों करते हैं यह सब आज जीवन का हिस्सा बन चुका है। लेकिन जब अपने ग्रंथों का मामला आता है तो हम बचत करते दिख जाते हैं। ऐसा क्यों? जबकि सब जानते हैं कि इंटरनेट का प्रयोग एक बार बच्चे की मानसिकता धूमिल कर सकता है किन्तु हमारा वैदिक साहित्य जिसमें एक बार किया निवेश उसे कभी पतन की ओर नहीं जाने देगा। वरन पीढ़ियों तक उसे बचत खाते की तरह परिवार को ब्याज में संस्कार देता रहेगा। यदि वह 10 मिनट भी अपने ग्रंथों, वेद, उपनिषद में देगा तो उसके मृत संस्कार भी जाग उठेंगे।

आर्य समाज की किसी धर्म-मत से लड़ाई नहीं है बस यह तो हजारों साल के पाखंड, कुरीतियों और कुप्रथाओं से लड़ रहा है, जिसमें रक्त रंजित भी हुआ कभी स्वामी दयानन्द के रूप में, कभी श्रद्धानन्द के रूप में, कभी पंडित लेखराम के रूप में। अब आर्य समाज पुनः अंगड़ाई ले चुका है, एक बार आना 2017 के विश्व पुस्तक मेले में देखना सभी धर्मों ,पंथों और मत-मतान्तरों के विभिन्न स्टाल लगे मिलेंगे। ईसाई समाज बाइबिल को लेकर, इस्लामिक समाज कुरान के प्रचार में, कोई आसाराम को निर्दोष बताता मिलेगा तो कोई राधे माँ का गुणगान करता दिख जायेगा। ओशो का अश्लील साहित्य बिकता मिलेगा। हिन्दी साहित्य हाल में केवल और केवल आर्यसमाज ही राष्ट्रवादी, समाज सुधारक, नवचेतना, सदाचारी, पाखंडों से मुक्ति दिलाने वाला, विधर्मियों के जाल से बचाने वाला साहित्य वितरित करता दिखेगा।

हर वर्ष देश-विदेश से हजारों की संख्या में धार्मिक संस्था पुस्तकों के माध्यम से हमारी संस्कृति पर हमला करने यहाँ आते हैं, निशुल्क कुरान और बाइबिल यहां बांटी जाती हैं। चुपचाप धर्मांतरण के जाल यहाँ बिछाये जाते हैं। जब लोग धर्मनिरपेक्षता की आड़ में हमारे वैदिक धर्म को नीचा दिखाने की नाकाम कोशिश करते हैं तब आर्य समाज क्या करे? उस समय जिस हिन्दू के हाथ में सत्यार्थ प्रकाश होता है वही विजयी होता है। जिसके पास नहीं होता वह हार जाता है। अब तो सब समझ गये होंगे कि आर्य समाज का पुस्तक मेले में जाना कोई व्यापारिक प्रयोजन नहीं है बल्कि अपनी महान वैदिक सभ्यता का पहरेदार बनकर जाता है। 50 रुपये की कीमत का सत्यार्थ प्रकाश दानी महानुभाओं के सहयोग से 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। गत वर्ष हिंदी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश ने समूचे मेले में सभी भाषाओं में बिक्री होने वाली किसी एक पुस्तक की सर्वाधिक बिक्री का रिकॉर्ड स्थापित किया था। उर्दू, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश की बिक्री इसके अतिरिक्त रही और विशेष बात यह है कि सत्यार्थ प्रकाश की यह प्रतियां मुस्लिम सहित मुख्यतः गैर आर्य समाजियों के घरों में गई। इस बार फिर आप सभी से निवेदन है आपको आमन्त्रण है आओ आर्य समाज के साथ इस राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में अपने कीमती समय की आहुति देवें।

-सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

कुछ दिन बाद इन्हें विस्थापित बंगाली हिन्दू कहा जाया करेगा !

....जेनेट इस समस्या की जड़ में 1400 साल पुराने इस्लाम के अंदर छिपी बुराइयों को जिम्मेदार मानती हैं। कुरान में यह संदेश खुलकर दिया गया है कि दुनिया भर में इस्लामी राज्य स्थापित हो। हर जगह इस्लाम जबरन धर्म परिवर्तन या गैर-मुसलमानों की हत्याएं करवाकर फैला है। लेख में बताया गया है कि जिन जिलों में मुसलमानों की संख्या ज्यादा है वहां पर वह हिन्दू कारोबारियों का बायकाट करते हैं। मालदा, मुर्शिदाबाद और उत्तरी दिनाजपुर जिलों में मुसलमान हिन्दुओं की दुकानों से सामान तक नहीं खरीदते। इसी कारण बड़ी संख्या में हिंदुओं को घर और कारोबार छोड़कर दूसरी जगहों पर जाना पड़ा। ये वह जिले हैं जहां हिन्दू अल्पसंख्यक हो चुके हैं जिन पर सरकार अपनी चुप्पियाँ साधे हुए हैं।...

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने एक बार कहा था कि भारत को समझना हो तो विदेशी अखबारों को पढ़ें शायद उनका यह कथन सच के काफी करीब है। जहाँ इन दिनों विश्व भर की मीडिया भारत के विमुद्रीकरण और यहाँ की अर्थव्यवस्था को लेकर उतार-चढाव का दौर देख रही है वही पिछले दिनों 'अमेरिकन थिंकर' मैगजीन के एक पेज पर यह आलेख भी प्रकाशित हुआ है कि कश्मीर के बाद अब बंगाल का नम्बर है। ये दावा है जानी-मानी अमेरिकी पत्रकार जेनेट लेवी का है जो अपने ताजा लेख में इस दावे के पक्ष में कई तथ्य पेश करती हैं। जेनेट लेवी लिखती हैं कि "बंटवारे के वक्त भारत के हिस्से वाले पश्चिमी बंगाल में मुसलमानों की आबादी 12 फीसदी से कुछ ज्यादा थी, जबकि पाकिस्तान के हिस्से में गए पूर्वी बंगाल में हिंदुओं की आबादी 30 फीसदी थी। आज पश्चिम बंगाल में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़कर 27 फीसदी हो चुकी है। कुछ जिलों में तो ये 63 फीसदी तक हो गई है। दूसरी तरफ बांग्लादेश में हिन्दू 30 फीसदी से घटकर 8 फीसदी बाकी बचे हैं।" जेनेट ने यह लेख उन पश्चिमी देशों के लिए खतरे की चेतावनी के तौर पर लिखा है जो अपने दरवाजे शरणार्थी के तौर पर आ रहे मुसलमानों के लिए खोल रहे है।"

वह भारत की इस दुर्दशा से सीख लेने के लिए आगे लिखती हैं कि किसी भी समाज में मुसलमानों की 27 फीसदी आबादी काफी है कि वहे उस जगह को अलग इस्लामी देश बनाने की मांग शुरू कर दे। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को पिछले चुनाव में लगभग पूरी मुस्लिम आबादी ने वोट दिए थे। जाहिर है ममता बनर्जी पर भी दबाव है कि वह मुसलमानों को खुश करने वाली नीतियां बनाएं। इसी के तहत उन्होंने सऊदी अरब से फण्ड पाने वाले 10 हजार से ज्यादा मदरसों को मान्यता देकर वहां की डिग्री को सरकारी नौकरी के काबिल बना दिया। इसके अलावा मस्जिदों के इमामों के लिए तरह-तरह के वजीफे घोषित किए हैं। ममता ने एक इस्लामिक शहर बसाने का प्रोजेक्ट भी शुरू किया है। पूरे बंगाल में मुस्लिम मेडिकल, टेक्निकल और नर्सिंग स्कूल खोले जा रहे हैं, जिनमें मुस्लिम छात्रों को सस्ती शिक्षा मिलेगी। इसके अलावा कई ऐसे अस्पताल बन रहे है, जिनमें सिर्फ मुसलमानों का इलाज होगा। वह लिखती हैं कि आखिर बंगाल में बेहद गरीबी में जी रहे लाखों हिंदू परिवारों को ऐसी किसी स्कीम का फायदा क्यों नहीं मिलता?

जेनेट लेवी ने अपने लेख में बंगाल में हुए दंगों का जिक्र किया है। उन्होंने लिखा है- 2007 में कोलकाता में बांग्लादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन के खिलाफ दंगे भड़क उठे थे। यह पहली स्पष्ट कोशिश थी जब बंगाल में मुस्लिम संगठनों ने इस्लामी ईशनिंदा (ब्लासफैमी) कानून की मांग शुरू कर दी थी। 1993 में तस्लीमा नसरीन ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों और उनको जबरन मुसलमान बनाने के मुद्दे पर किताब 'लज्जा' लिखी थी। इस किताब के बाद उन्हें कट्टरपंथियों के डर से बांग्लादेश छोड़ना पड़ा था। इसके बाद वह कोलकाता में बस गई। यह हैरत की बात है कि हिन्दुओं पर अत्याचार की कहानी लिखने वाली तस्लीमा नसरीन को बांग्लादेश ही नहीं, बल्कि भारत के मुसलमानों ने भी नफरत की नजर से देखा। भारत में उनका गला काटने तक के फतवे जारी किए गए। इस सबके दौरान बंगाल की वामपंथी या तृणमूल की सरकारों ने कभी उनका साथ नहीं दिया। क्योंकि ऐसा करने पर मुसलमानों के नाराज होने का डर था।

2013 में पहली बार बंगाल के कुछ कट्टरपंथी मौलानाओं ने अलग 'मुगलिस्तान' की मांग शुरू कर दी। इसी साल बंगाल में हुए दंगों में सैकड़ों हिन्दुओं के घर और दुकानें लूटे गए। साथ ही कई मंदिरों को तोड़ दिया गया। इन दंगों में पुलिस ने लोगों को बचाने की कोई कोशिश नहीं की। यह सब कश्मीर के शुरुआती दिनों जैसा है आखिर भारत सरकार कश्मीर की तरह बंगाल में अफसा कानून का इस्तेमाल क्यों नहीं करती?

जेनेट लेवी ने दुनिया भर की कई ऐसी मिसालें दी हैं, जहां मुस्लिम आबादी बढ़ने के साथ ही आतंक, कठमुल्लापन और अपराध के मामले बढ़ने लगे। इन सभी जगहों पर धीरे-धीरे शरीयत कानून की मांग शुरू हो जाती है, जो आखिर में अलग देश की मांग तक पहुंच जाती है। जेनेट इस समस्या की जड़ में 1400 साल पुराने इस्लाम के अंदर छिपी बुराइयों को जिम्मेदार मानती हैं। कुरान में यह संदेश खुलकर दिया गया है कि दुनिया भर में इस्लामी राज्य स्थापित हो। हर जगह इस्लाम जबरन धर्म परिवर्तन या गैर-मुसलमानों की हत्याएं करवाकर फैला है। लेख में बताया गया है कि जिन जिलों में मुसलमानों की संख्या ज्यादा है वहां पर वह हिन्दू कारोबारियों का बायकाट करते हैं। मालदा, मुर्शिदाबाद और उत्तरी दिनाजपुर जिलों में मुसलमान हिन्दुओं की दुकानों से सामान तक नहीं खरीदते। इसी कारण बड़ी संख्या में हिंदुओं को घर और कारोबार छोड़कर दूसरी जगहों पर जाना पड़ा। ये वह जिले हैं जहां हिन्दू अल्पसंख्यक हो चुके हैं जिन पर सरकार अपनी चुप्पियाँ साधे हुए है। जब इन सब कारणों से मणिपुर और जम्मू-कश्मीर जैसे प्रांतों में भारतीय सेना को विशेष अधिकार दिए गए हैं तो बंगाल में क्यों नहीं? यदि स्थिति यही रही तो जिस तरह आज कश्मीरी विस्थापितों को कश्मीरी पंडित कहा जाता है आगे आने वाले समय में इन्हें विस्थापित बंगाली हिन्दू के नाम से जाना जाया करेगा।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग — उत्तर प्रदेश का एक साहसी आर्यवीर

1942-43 ई. की घटना है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध मिशनरी मधुर गायक श्री शिवनाथजी त्यागी बाबूगढ़ के उत्सव से वापस आ रहे थे कि मार्ग में नहर के किनारे दस शस्त्रधारी मुसलमानों ने आर्य प्रचारकों की इस मण्डली (जिसमें केवल तीन सज्जन थे) पर धावा बोल दिया। बचने का प्रश्न ही न था। मुठभेड़ हुई ही थी कि अकस्मात् मोटर साइकल पर एक आर्य रणबांकुरा जयमलसिंह त्यागी उधर आ निकला। अपने उपदेशकों को विपदा में देखकर उसने बदमाशों को ललकारा, कुछ को नहर में फेंका और शिवनाथजी त्यागी आदि सबको बचाया। ऐसे साहसी धर्मवीरों के नाम वा काम पर हमें बहुत गर्व है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

बोध कथा — वरेण्यम्

परमहंस श्री रामकृष्ण जी महाराज जीवन के अन्तिम दिनों में रुग्ण हो गये। गले के अन्दर कैंसर हो गया उन्हें। डॉक्टरों ने चिकित्सा की, पर वे स्वस्थ नहीं हुए। रुग्णता बढ़ती गई। कलकत्ता के प्रसिद्ध विद्वान् दु:खी होकर उनके पास आये; बोले -"डॉक्टर हार गये योगिराज! अब केवल एक ही उपाय है। आप तीन बार कह दीजिये बीमारी दूर हो जाये, तो बीमारी चली जायेगी। तीन बार माँ से प्रार्थना कर दीजिये, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।"

श्री रामकृष्ण उस समय ठीक प्रकार से बोल नहीं सकते थे। कष्ट से बोले-"शशिधर! मां से क्या मैं ऐसी बात कहूं। क्या मां को स्वयं पता नहीं कि मेरे लिए अच्छा क्या है? जो वह उचित समझती हैं, वही करती हैं। मैंने उनसे कभी कुछ मांगा नहीं। मै। उनसे कभी कुछ मांगूंगा नहीं।"

यह है सच्चे भक्त की पहचान! वह व्यापार नहीं करता। 'वरेण्यम्' कहकर अपने-आपको ईश्वर के अर्पण कर देता है। *साभार : बोध कथाएं*

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दलित मुस्लिम एकता की जमीनी हकीकत

- डॉ. विवेक आर्य

आजकल देश में दलित राजनीति की चर्चा जोरों पर है। इसका मुख्य कारण नेताओंद्वारा दलितों का हित करना नहीं अपितु उन्हें एक वोट बैंक के रूप में देखना हैं। इसीलिए हर राजनीतिक पार्टी दलितों को लुभाने की कोशिश करती दिखती है। अपने आपको सेक्युलर कहलाने वाले कुछ नेताओं ने एक नया जुमला उछाला है। यह जुमला है दलित मुस्लिम एकता। इन नेताओं ने यह सोचा कि दलितों और मुस्लिमों के वोट बैंक को संयुक्त कर दें तो 35 से 50 प्रतिशत वोट बैंक आसानी से बन जायेगा और उनकी जीत सुनिश्चित हो जाएगी। जबकि सत्य विपरीत है। दलितों और मुस्लिमों का वोट बैंक बनना असंभव हैं। क्योंकि जमीनी स्तर पर दलित हिन्दू समाज सदियों से मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा प्रताड़ित होता आया है।

1. मुसलमानों ने दलितों को मैला ढोने के लिए बाध्य किया : भारत देश में मैला ढोने की कुप्रथा कभी नहीं थी। मुस्लिम समाज में बुर्के का प्रचलन था। इसलिए घरों से शौच उठाने के लिए हिंदुओं विशेष रूप से दलितों को मैला ढोने के लिए बाधित किया गया। जो इस्लाम स्वीकार कर लेता था। वह इस अत्याचार से छूट जाता था। धर्म स्वाभिमानी दलित हिंदुओं ने अमानवीय अत्याचार के रूप में मैला ढोना स्वीकार किया। मगर अपने पूर्वजों का धर्म नहीं छोड़ा। फिर भी अनेक दलित प्रलोभन और दबाव के चलते मुसलमान बन गए।

2. इस्लाम स्वीकार करने के बाद भी दलितों को बराबरी का दर्जा नहीं मिला : दलितों को इस्लाम स्वीकार करने के बाद भी बराबरी का दर्जा नहीं मिला। इसका मुख्य कारण इस्लामिक भेदभाव था। डॉ. अम्बेडकर इस्लाम में प्रचलित जातिवाद से भली प्रकार से परिचित थे। वे जानते थे कि मुस्लिम समाज में अरब में पैदा हुए मुस्लिम (शुद्ध रक्त वाले) अपने आपको उच्च समझते है और धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम बने भारतीय दूसरे दर्जे के माने जाते हैं। अपनी पुस्तक पाकिस्तान और भारत के विभाजन, अम्बेडकर वांग्मय खंड 15 में उन्होंने स्पष्ट लिखा है-

1. 'अशरफ' अथवा उच्च वर्ग के मुसलमान (1) सैयद, (2) शेख, (3) पठान, (4) मुगल, (5) मलिक और (6) मिर्जा।

2. 'अजलफ' अथवा निम्न वर्ग के मुसलमान : इसलिए जो दलित मुस्लिम बन गए वे दूसरे दर्जे के 'अजलफ' मुस्लिम कहलाये। उच्च जाति वाले 'अशरफ' मुस्लिम नीच जाति वाले 'अजलफ' मुसलमानों से रोटी-बेटी का रिश्ता नहीं रखते। ऊपर से शिया-सुन्नी, देवबंदी- बरेलवी के झगड़ों का मतभेद। सत्य यह है कि इस्लाम में समानता और सद्भाव की बात करने और जमीनी सच्चाई एक दूसरे के विपरीत थी। इसे हम हिन्दी की प्रसिद्ध कहावत 'चौबे जी गए थे छबे जी बनने दुबे जी बन कर रह गए' से भली भांति समझ सकते हैं।

3. दलित समाज में मुसलमानों के विरुद्ध प्रतिक्रिया : दलितों ने देखा कि इस्लाम के प्रचार के नाम पर मुस्लिम मौलवी दलित बस्तियों में प्रचार के बहाने आते और दलित हिन्दू युवक-युवतियों को बहकाने का कार्य करते। दलित युवकों को बहकाकर उन्हें गोमांस खिला कर अपभ्रष्ट कर देते थे और दलित लड़कियों को भगाकर उन्हें किसी की तीसरी या चौथी बीवी बना डालते थे। दलित समाज के होशियार चौधरियों ने इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए एक व्यावहारिक युक्ति निकाली। उन्होंने प्रतिक्रिया रूप से दलितों ने सूअरों को पालना शुरू कर दिया था। एक सुअरी के अनेक बच्चे एक बार में जन्मते। थोड़े समय में पूरी दलित बस्ती में सूअर ही सूअर दिखने लगे। सूअरों से मुस्लिम मौलवियों को विशेष चिढ़ थी। सूअर देखकर मुस्लिम मौलवी दलितों की बस्तियों में इस्लाम के प्रचार करने से हिचकते थे। यह एक प्रकार का सामाजिक बहिष्कार रूपी प्रतिरोध था। पाठक समझ सकते हैं कैसे सूअरों के माध्यम से दलितों ने अपनी धर्मरक्षा की थी। उनके इस कदम से उनकी बस्तियां मलिन और बीमारियों का घर बन गई। मगर उन्हें मौलवियों से छुटकारा मिल गया।

4. दलित हिंदुओं का सवर्ण हिंदुओं के साथ मिलकर संघर्ष : जैसे सवर्ण हिन्दू समाज मुसलमानों के अत्याचारों से आतंकित था वैसे ही हिन्दू दलित भी उनके अत्याचारों से पूरी तरह आतंकित था। यही कारण था जब-जब हिंदुओं ने किसी मुस्लिम हमलावर के विरोध में सेना को एकत्र किया। तब-तब सवर्ण एवं दलित दोनों हिंदुओं ने बिना किसी भेदभाव के एक साथ मिलकर उनका प्रतिवाद किया। मैं यहाँ पर एक प्रेरणादायक घटना का उदाहरण देना चाहता हूँ। तैमूर लंग ने जब भारत देश पर हमला किया तो उसके क्रूरता और अत्याचार की कोई सीमा नहीं थी। तैमूर लंग के अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू जनता ने संगठित होकर उसका सामना करने का निश्चय किया। खाप नेता धर्मपालदेव के नेतृत्व में पंचायती सेना को एकत्र किया गया। इस सेना के दो उपप्रधान सेनापति थे। इस सेना के सेनापति जोगराजसिंह नियुक्त हुए थे जबकि उपप्रधान सेनापति - (1) धूला भंगी (बालमीकी) (2) हरबीर गुलिया जाट चुने गये। धूला भंगी जि. हिसार के हांसी गांव (हिसार के निकट) का निवासी था। यह महाबलवान निर्भय योद्धा, गोरीला (छापामार) युद्ध का महान् विजयी धाड़ी था। उपप्रधान सेनापति चुना जाने पर इसने भाषण दिया कि - "मैंने अपनी सारी आयु में अनेक धाड़े मारे हैं। आपके सम्मान देने से मेरा खून उबल उठा है। मैं वीरों के सम्मुख प्रण करता हूं कि देश की रक्षा के लिए अपना खून बहा दूंगा तथा सर्वखाप के पवित्र झण्डे को नीचे नहीं होने दूंगा। मैंने अनेक युद्धों में भाग लिया है तथा इस युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान दे दूंगा।" यह कहकर उसने अपनी जांघ से खून निकालकर प्रधान सेनापति के चरणों में उसने खून के छींटे दिये। उसने म्यान से बाहर अपनी तलवार निकालकर कहा "यह शत्रु का खून पीयेगी और म्यान में नहीं जायेगी।" इस वीर योद्धा धूला के भाषण से पंचायती सेना दल में जोश एवं साहस की लहर दौड़ गई और सबने जोर-जोर से मातृभूमि के नारे लगाये। (सन्दर्भ-जाट वीरों का इतिहास: दलीप सिंह अहलावत, पृष्ठान्त-380)

दूसरा उपप्रधान सेनापति हरबीरसिंह जाट था। यह हरियाणा के जि. रोहतक गांव बादली का रहने वाला था। इसकी आयु 22 वर्ष थी। यह निडर एवं शक्तिशाली वीर योद्धा था। उप-प्रधान सेनापति हरबीरसिंह गुलिया ने अपने पंचायती सेना के 25,000 वीर योद्धा सैनिकों के साथ तैमूर के घुड़सवारों के बड़े दल पर भयंकर धावा बोल दिया जहां पर तीरों तथा भालों से घमासान युद्ध हुआ। इसी घुड़सवार सेना में तैमूर भी था। हरबीरसिंह गुलिया ने आगे बढ़कर शेर की तरह दहाड़ कर तैमूर की छाती में भाला मारा जिससे वह घोड़े से नीचे गिरने ही वाला था कि उसके एक सरदार खिजर ने उसे सम्भालकर घोड़े से अलग कर लिया। तैमूर इसी भाले के घाव से ही अपने देश समरकन्द में पहुंचकर मर गया। वीर योद्धा हरबीरसिंह गुलिया पर शत्रु के 60 भाले तथा तलवारें एकदम टूट पड़ीं जिनकी मार से यह योद्धा अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा। उसी समय प्रधान सेनापति जोगराजसिंह गुर्जर ने अपने 22000 मल्ल योद्धाओं के साथ शत्रु की सेना पर धावा बोलकर उनके 5000 घुड़सवारों को काट डाला। जोगराजसिंह ने स्वयं अपने हाथोंसे अचेत हरबीर सिंह को उठाकर यथास्थान पहुंचाया। परन्तु कुछ घण्टे बाद यह वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गया। हरिद्वार के जंगलों में तैमूरी सेना के 2805 सैनिकों के रक्षादल पर भंगी कुल के उपप्रधान सेनापति धूला धाड़ी वीर योद्धा ने अपने 190 सैनिकों के साथ धावा बोल दिया। शत्रु के काफी सैनिकों को मारकर ये सभी 190 सैनिक एवं धूला धाड़ी अपने देश की रक्षा हेतु वीरगति को प्राप्त हो गये।

हमारे महान इतिहास की इस लुप्त प्राय: घटना को यहाँ देने के दो प्रयोजन है। पहला तो यह सिद्ध करना कि हिन्दू समाज को अगर अपनी रक्षा करनी है तो उसे जातिवाद के भेद को भूलकर संगठित होकर विधर्मियों का सामना करना होगा। दूसरा इससे यह भी सिद्ध होता है कि उस काल में जातिवाद का प्रचलन नहीं था। धूला भंगी बालमीकी अपनी योग्यता, अपने क्षत्रिय गुण, कर्म और स्वभाव के कारण सवर्ण और दलित सभी की मिश्रित धर्मसेना का नेतृत्व किया।

जातिवाद रूपी विषबेल हमारे देश में पिछली कुछ शताब्दियों में ही पोषित हुई। वर्तमान में भारतीय राजनीति ने इसे अधिक से अधिक गहरा करने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया।

5. भक्तिकाल के दलित संतों जैसे रविदास, कबीरदास द्वारा इस्लाम की मान्यताओं की कटु आलोचना : अगर इस्लाम दलितों के लिए हितकर होता तो हिन्दू समाज में उस काल में धर्म के नाम पर प्रचलित अन्धविश्वास और अंध परंपराओं पर तीखा प्रहार करने वाले दलित संत इस्लाम की भरपेट प्रशंसा करते। इसके विपरीत भक्तिकाल के दलित संतों जैसे रविदास, कबीरदास द्वारा इस्लाम की मान्यताओं की कटु आलोचना करते मिलते है।

संत रविदास का चिंतन : मुस्लिम सुल्तान सिकंदर लोधी अन्य किसी भी सामान्य मुस्लिम शासक की तरह भारत के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की उधेड़बुन में लगा रहता था। इन सभी आक्रमणकारियों की दृष्टि गाजी उपाधि पर रहती थी। सुल्तान सिकंदर लोधी ने संत रविदास जी महाराज मुसलमान बनाने की जुगत में अपने मुल्लाओं को लगाया। जनश्रुति है कि वो मुल्ला संत रविदास जी महाराज से प्रभावित होकर स्वयं उनके शिष्य बन गए और एक तो रामदास नाम रख कर हिन्दू हो गया। सिकंदर लोदी अपने षड्यंत्र की यह दुर्गति होने पर चिढ़ गया और उसने संत रविदास जी को बंदी बना लिया और उनके अनुयायियों को हिन्दुओं में सदैव से निषिद्ध खाल उतारने, चमड़ा कमाने, जूते बनाने के काम में लगाया। इसी दुष्ट ने चंवर वंश के क्षत्रियों को अपमानित करने के लिये नाम बिगाड़ कर चमार सम्बोधित किया। चमार शब्द का पहला प्रयोग यहीं से शुरू हुआ। संत रविदास जी महाराज की ये पंक्तियाँ सिकंदर लोधी के अत्याचार का वर्णन करती हैं।

वेद धर्म सबसे बड़ा, अनुपम सच्चा ज्ञान
फिर मैं क्यों छोडूँ इसे पढ़ लूँ झूट कुरान
वेद धर्म छोडूँ नहीं कोसिस करो हजार
तिल-तिल काटो चाही गोदो अंग कटार

चंवर वंश के क्षत्रिय संत रविदास जी के बंदी बनाने का समाचार मिलने पर दिल्ली पर चढ़दौड़े और दिल्ली की नाकाबंदी कर ली। विवश होकर सुल्तान सिकंदर लोदी को संत रविदास जी को छोड़ना पड़ा। इस झपट का जिक्र इतिहास की पुस्तकों में नहीं है मगर संत रविदास जी के ग्रन्थ रविदास रामायण की यह पंक्तियाँ सत्य उद्घाटित करती हैं-

बादशाह ने वचन उचारा ।
मत प्यादरा इसलाम हमारा ।।
खंडन करै उसे रविदासा ।
उसे करौ प्राण कौ नाशा ।।
जब तक राम नाम रट लावे ।
दाना पानी यह नहीं पावे ।।
जब इसलाम धर्म स्वीरकारे ।
मुख से कलमा आप उचारै ।।
पढे नमाज जभी चितलाई ।
दाना पानी तब यह पाई ।।

जैसे उस काल में इस्लामिक शासक हिंदुओं को मुसलमान बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते रहते थे वैसे ही आज भी कर रहे हैं। उस काल में दलितों के प्रेरणास्रोत्र संत रविदास सरीखे महान चिंतक थे। जिन्हें अपने प्रान न्योछावर करना स्वीकार था मगर वेदों को त्याग कर कुरान पढ़ना स्वीकार नहीं था।

कबीरदास का चिंतन : कबीरदास इस्लामिक सुन्नत, रोजा, नमाज, कलमा, काबा, बांग और ईद पर कुरबानी का स्पष्ट खंडन करते थे। सिखों के प्रसिद्द ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहिब में कबीर साहिब के इस्लाम संबंधी चिंतन को यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. सुन्नत का खंडन

काजी तै कवन कतेब बखानी ।।
पदत गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ।।1।।
सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई ।।
जउरे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ।।2।।
सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ।
अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ।।3।।
छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी कबीरै
पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ।।4।।

सन्दर्भ- राग आसा कबीर पृष्ठ 477

अर्थात् कबीर जी कहते हैं ओ काजी तो कौनसी किताब का बखान करता है। पढ़ते हुऐ, विचरते हुऐ सब को ऐसे मार दिया जिनको पता ही नहीं चला। जो धर्म के प्रेम में सख्ती के साथ मेरी सुन्नत करेगा सो मैं नहीं कराऊँगा। यदि खुदा सुन्नत करने ही से ही मुसलमान करेगा तो अपने आप लिंग नहीं कट जायेगा। यदि सुन्नत करने से ही मुस्लमान होगा तो औरत का क्या करोगे? अर्थात कुछ नहीं और अर्धांगि नारी को छोड़ते नहीं इसलिए हिन्दू ही रहना अच्छा है। ओ काजी! कुरान को छोड़! राम भज१ तू बड़ा भारी अत्याचार कर रहा है, मैंने तो राम की टेक पकड़ ली हैं, मुस्लमान सभी हार कर पछता रहे है।

2. रोजा, नमाज, कलमा, काबा का खंडन

रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ।।1।।
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ।।2।।

सन्दर्भ- राग आसा कबीर पृष्ठ 480

अर्थात् मुसलमान रोजा रखते हैं और नमाज गुजारते है। कलमा पढ़ते है और कबीर जी कहते हैं इन किसी से बहिश्त न होगी। इस घट (शरीर) के अंदर ही 70 काबा के अगर कोई विचार कर देखे तो-

3. बांग का खंडन

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ।।
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ।।184।।

सन्दर्भ- राग आसा कबीर पृष्ठ 1374

अर्थात् कबीर जी कहते हैं कि ओ मुल्ला। खुदा बहरा नहीं जो ऊपर चढ़ कर बांग दे रहा है। जिस कारण तू बांग दे रहा है उसको दिल ही में तलाश कर।

4. हिंसा (कुरबानी) का खंडन

जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत
हउ तउ किउ मुरगी मारै ।।1।।
मुलां कहहु निआउ खुदाई
तेरे मन का भरमु न जाई ।। 1।।
पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी
माटी कउ बिसमिलि कीआ ।।
जोति सरूप अनाहत लागी
कहु हलालु किआ।। 2।।
किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ
किआ मसीति सिरु लाइआ।।
जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु
किआ हज काबै जाइआ ।। 3।।

सन्दर्भ विलास प्रभाती कबीर पृष्ठ 1350

अर्थात् कबीर जी कहते हैं ओ मुसलमानों। जब तुम सब में एक ही खुद बताते हो तो तुम मुर्गी को क्यों मारते हो। ओ मुल्ला! खुदा का न्याय विचार कर कह। तेरे मन का भ्रम नहीं गया है। पकड़ करके जीव ले आया, उसकी देह का नाश कर दिया, कहो मिट्टी को ही तो बिस्मिल किया। तेरा ऐसा करने से तेरा पाक उजू क्या, मुह धोना क्या, मस्जिद में सिजदा करने से क्या, अर्थात् हिंसा करने से तेरे सभी काम बेकार हैं।

श्री राम जी के गुणगान के अनेक प्रमाण कबीर रचनावली में मिलते हैं। बहुत कम लोग जानते हैं कि कबीर दास ने गौ रक्षा के लिए अपना विवाह करवाने से मना कर दिया था। उनके वधु पक्ष वाले उनके विवाह में गौ मांस परोसने की योजना बना रहे थे। कबीर दास गौ प्रेमी थे। उन्होंने स्पष्ट कह दिया। अगर गौ माता कटी तो वह विवाह नहीं करेंगे। अंत में कबीर दास ने वह गौ एक ब्राह्मण को दे दी। तब जाकर उनका विवाह सम्पन्न हुआ।

इन सभी प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि दलित संत वेद, तीर्थ, जप, राम-कृष्ण, यज्ञोपवीत, गौरक्षा आदि वैदिक परम्पराओं में अटूट विश्वास रखते थे एवं इस्लाम की मान्यताओं के कटु आलोचक थे।

6. डॉ. अम्बेडकर का इस्लाम सम्बंधित चिंतन : डॉ. अम्बेडकर को इस्लाम स्वीकार करने के अनेक प्रलोभन दिए गए। स्वयं उस काल में विश्व का सबसे धनी व्यक्ति हैदराबाद का निजाम इस्लाम स्वीकार करने के लिए बड़ी धनराशि का प्रलोभन देने आया। मगर जातिवाद का कटु विष पीने का अनुभव कर चुके डॉ.

- शेष पृष्ठ 5 पर

पृष्ठ 4 का शेष

अम्बेडकर ने न ईसाई मत को स्वीकार किया और न इस्लाम मत को स्वीकार किया। क्योंकि वह जानते थे कि इस्लाम मत स्वीकार करने से दलितों का किसी भी प्रकार से हित नहीं हो सकता। अपनी पुस्तक भारत और पाकिस्तान के विभाजन में उन्होंने इस्लाम मत पर अपने विचार खुल कर प्रकट किये है, इसीलिए उन्होंने 1947 में पाकिस्तान और बांग्लादेश में रहने वाले सभी हिन्दू दलितों को भारत आने का निमंत्रण दिया था।

डॉ. अम्बेडकर के इस्लाम के विषय में विचार

१. हिन्दू काफिर सम्मान के योग्य नहीं- "मुसलमानों के लिए हिन्दू काफिर हैं और एक काफिर सम्मान के योग्य नहीं है। वह निम्न कुल में जन्मा होता है, और उसकी कोई सामाजिक स्थिति नहीं होती। इसलिए जिस देश में काफिरों का शासन हो, वह मुसलमानों के लिए दार-उल-हर्ब है ऐसी स्थित में यह साबित करने के लिए और सबूत देने की आवश्यकता नहीं है कि मुसलमान हिन्दू सरकार के शासन को स्वीकार नहीं करेंगे।" (पृ. 34)

२. मुस्लिम भ्रातृभाव केवल मुसलमानों के लिए- "इस्लाम एक बन्द निकाय की तरह है, जो मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच जो भेद यह करता है, वह बिल्कुल मूर्त और स्पष्ट है। इस्लाम का भ्रातृभाव मानवता का भ्रातृत्व नहीं है, मुसलमानों का मुसलमानों से ही भ्रातृभाव मानवता का भ्रातृत्व नहीं है, मुसलमानों का मुसलमानों से ही भ्रातृत्व है। यह बंधुत्व है, परन्तु इसका लाभ अपने ही निकाय के लोगों तक सीमित है और जो इस निकाय से बाहर हैं, उनके लिए इसमें सिर्फ घृणा और शत्रुता ही है। इस्लाम का दूसरा अवगुण यह है कि यह सामाजिक स्वशासन की एक पद्धति है और स्थानीय स्वशासन से मेल नहीं खाता, क्योंकि मुसलमानों की निष्ठा, जिस देश में वे रहते हैं, उसके प्रति नहीं होती, बल्कि वह उस धार्मिक विश्वास पर निर्भर करती है, जिसका कि वे एक हिस्सा है। एक मुसलमान के लिए इसके विपरीत या उल्टे सोचना अत्यन्त दुष्कर है। जहाँ कहीं इस्लाम का शासन हैं, वहीं उसका अपना विश्वास है। दूसरे शब्दों में, इस्लाम एक सच्चे मुसलमानों को भारत को अपनी मातृभूमि और हिन्दुओं को अपना निकट सम्बन्धी मानने की इजाजत नहीं देता। सम्भवत: यही वजह थी कि मौलाना मुहम्मद अली जैसे एक महान भारतीय, परन्तु सच्चे मुसलमान ने, अपने शरीर को हिन्दुस्तान की बजाए येरूसलम में दफनाया जाना अधिक पसंद किया।"

३. एक साम्प्रदायिक और राष्ट्रीय मुसलमान में अन्तर देख पाना मुश्किल- "लीग को बनाने वाले साम्प्रदायिक मुसलमानों और राष्ट्रवादी मुसलमानों के अन्तर को समझना कठिन है। यह अत्यन्त संदिग्ध है कि राष्ट्रवादी मुसलमान किसी वास्तविक जातीय भावना, लक्ष्य तथा नीति से कांग्रेस के साथ रहते हैं, जिसके फलस्वरूप वे मुस्लिम लीग से पृथक पहचाने जाते हैं। यह कहा जाता है कि वास्तव में अधिकांश कांग्रेसजनों की धारण है कि इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है, और कांग्रेस के अन्दर राष्ट्रवादी मुसलमानों की स्थिति साम्प्रदायिक मुसलमानों की सेना की एक चौकी की तरह है। यह धारणा असत्य प्रतीत नहीं होती। जब कोई व्यक्ति इस बात को याद करता है कि राष्ट्रवादी मुसलमानों के नेता स्वर्गीय डॉ. अंसारी ने साम्प्रदायिक निर्णय का विरोध करने से इंकार किया था, यद्यपि कांग्रेस और राष्ट्रवादी मुसलमानों द्वारा पारित प्रस्ताव का घोर विरोध होने पर भी मुसलमानों को पृथक निर्वाचन उपलब्ध हुआ।" (पृ. 414-415)

४. भारत में इस्लाम के बीज मुस्लिम आक्रांताओं ने बोए- "मुस्लिम आक्रांता नि:संदेह हिन्दुओं के विरुद्ध घृणा के गीत गाते हुए आए थे। परन्तु वे घृणा का वह गीत गाकर और मार्ग में कुछ मंदिरों को आग लगा कर ही वापस नहीं लौटे। ऐसा होता तो यह वरदान माना जाता। वे ऐसे नकारात्मक परिणाम मात्र से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने इस्लाम का पौधा लगाते हुए एक सकारात्मक कार्य भी किया। इस पौधे का विकास भी उल्लेखनीय है। यह ग्रीष्म में रोपा गया कोई पौधा नहीं है। यह तो ओक (बांज) वृक्ष की तरह विशाल और सुदृढ़ है। उत्तरी भारत में इसका सर्वाधिक सघन विकास हुआ है। एक के बाद हुए दूसरे हमले ने इसे अन्यत्र कहीं को भी अपेक्षा अपनी 'गाद' से अधिक भरा है और उन्होंने निष्ठावान मालियों के तुल्य इसमें पानी देने का कार्य किया है। उत्तरी भारत में इसका विकास इतना सघन है कि हिन्दू और बौद्ध अवशेष झाड़ियों के समान होकर रह गए हैं। यहाँ तक कि सिखों की कुल्हाड़ी भी इस ओक (बांज) वृक्ष को काट कर नहीं गिरा सकी।" (पृ. 49)

५. मुसलमानों की राजनीतिक दाँव-पेंच में गुंडागर्दी- "तीसरी बात, मुसलमानों द्वारा राजनीति में अपराधियों के तौर-तरीके अपनाया जाना है। दंगे इस बात के पर्याप्त संकेत हैं कि गुंडागर्दी उनकी राजनीति का एक स्थापित तरीका हो गया है।" (पृ. 267)

६. हत्यारे धार्मिक शहीद- "महत्त्व की बात यह है कि धर्माध मुसलमानों द्वारा कितने प्रमुख हिन्दुओं की हत्या की गई। मूल प्रश्न है उन लोगों के दृष्टिकोण का, जिन्होंने यह कत्ल किये। जहाँ कानून लागू किया जा सका, वहाँ हत्यारों को कानून के अनुसार सजा मिली तथापि प्रमुख मुसलमानों ने इन अपराधियों की कभी निंदा नहीं की। इसके विपरीत उन्हें 'गाजी' बताकर उनका स्वागत किया गया और उनके क्षमादान के लिए आन्दोलन शुरू कर दिए गए। इस दृष्टिकोण का एक उदाहरण है लाहौर के बैरिस्टर मि. बरकत अली का, जिसने अब्दुल कयूम की ओर से अपील दायर की। वह तो यहाँ तक कह गया कि कयूम नाथूराम की हत्या का दोषी नहीं है, क्योंकि कुरान के कानून के अनुसार यह न्यायोचित है। मुसलमानों का यह दृष्टिकोण तो समझ में आता है, परन्तु जो बात समझ में नहीं आती, वह है श्री गांधी का दृष्टिकोण।" (पृ. 147-148)

७. हिन्दू और मुसलमान दो विभिन्न प्रजातियां- "आध्यात्मिक दृष्टि से हिन्दू और मुसलमान केवल ऐसे दो वर्ग या सम्प्रदाय नहीं हैं जैसे प्रोटेस्टेंट्स और कैथोलिक या शैव और वैष्णव, बल्कि वे तो दो अलग-अलग प्रजातियां हैं।" (पृ. 185)

८. हिन्दू-मुस्लिम एकता असफल क्यों रही ? - "हिन्दू-मुस्लिम एकता की विफलता का मुखय कारण इस अहसास का न होना है कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच जो भिन्नताएं हैं, वे मात्र भिन्नताएं ही नहीं हैं, और उनके बीच मनमुटाव की भावना सिर्फ भौतिक कारणों से ही नहीं हैं इस विभिन्नता का स्रोत ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दुर्भावना है, और राजनीतिक दुर्भावना तो मात्र प्रतिबिंब है। ये सारी बातें असंतोष का दरिया बना लेती हैं जिसका पोषण उन तमाम बातों से होता है जो बढ़ते-बढ़ते सामान्य धाराओं को आप्लावित करता चला जाता हैं दूसरे स्रोत से पानी की कोई भी धारा, चाहे वह कितनी भी पवित्र क्यों न हो, जब स्वयं उसमें आ मिलती हैं तो उसका रंग बदलने के बजाय वह स्वयं उस जैसी हो जाती हैं दुर्भावना का यह अवसाद, जो धारा में जमा हो गया है, अब बहुत पक्का और गहरा बन गया है। जब तक ये दुर्भावनाएं विद्यमान रहती हैं, तब तक हिन्दू और मुसलमानों के बीच एकता की अपेक्षा करना अस्वाभाविक है।" (पृ. 336)

९. हिन्दू-मुस्लिम एकता असम्भव कार्य- "हिन्दू-मुस्लिम एकता की निरर्थकता को प्रगट करने के लिए मैं इन शब्दों से और कोई शबदावली नहीं रख सकता। अब तक हिन्दू-मुस्लिम एकता कम-से-कम दिखती तो थी, भले ही वह मृग मरीचिका ही क्यों न हो। आज तो न वह दिखती है और न ही मन में है। यहाँ तक कि अब तो गाँधी जी ने भी इसकी आशा छोड़ दी है और शायद अब वह समझने लगे हैं कि यह एक असम्भव कार्य है।" (पृ. 178)

(सभी उदाहरण बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खंड 15-'पाकिस्तान और भारत के विभाजन, 2000 से लिए गए हैं)

इतिहास साक्षी है दलित मुस्लिम एकता का झुनझुना बजाने वाले दलित नेता जोगेंद्र नाथ मंडल को क्यों पाकिस्तान से भाग कर भारत आना पड़ा था। मंडल ने दलितों को बांग्लादेश में रुकने का आवाहन किया था। 1947 के बाद में वह पूर्वी पाकिस्तान में मंत्री भी बने थे। पूर्वी पाकिस्तान में मण्डल की अहमियत धीरे-धीरे खत्म हो गई । दलित हिंदुओं पर अत्याचार शुरू हो चुके थे। 30 प्रतिशत दलित हिन्दू आबादी की जान-माल-इज्जत अब खतरे में थी। मंडल को अपनी भूल पर पछतावा हुआ। मण्डल ने दुखी होकर जिन्ना को कई पत्र लिखे, उनके कुछ अंश पढ़िये :-

मंडल ने हिंदुओं के संग होने वाले बरताव के बारे में लिखा, "मुस्लिम, हिंदू वकीलों, डाक्टरों, दुकानदारों और कारोबारियों का बहिष्कार करने लगे, जिसकी वजह से इन लोगों को जीविका की तलाश में पश्चिम बंगाल जाने के लिए मजबूर होना पड़ा।" गैर-मुस्लिमों के संग नौकरियों में अक्सर भेदभाव होता है। लोग हिंदुओं के साथ खान-पान भी पसंद नहीं करते! पूर्वी बंगाल के हिंदुओं (दलित-सवर्ण सभी) के घरों को आधिकारिक प्रक्रिया पूरी किए बगैर कब्जा कर लिया गया और हिन्दू मकान मालिकों को मुस्लिम किरायेदारों ने किराया देना काफी पहले बंद कर दिया था।

इससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता अब नहीं है।वर्तमान में भी व्यावहारिक रूप से अपने शासन में मुसलमान दलितों के साथ क्या करते हैं। इसका उदहारण आगे पढ़ेंो। अगर दलित-मुस्लिम एकता संभव होती तो क्या दलित संत और डॉ. अम्बेडकर अपरिपक्व और गलत थे ? यह यक्ष प्रश्न इस लेख को पढ़ने वाले सभी दलित भाइयों के लिए हैं।

7. पाकिस्तान में दलितों के हालात - 1947 के पश्चात् पाकिस्तान में बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू दलित अपनी मजबूरी के चलते रुक गए। इन दलितों का सम्बन्ध कॉल, भील और वाल्मीकि जातियों से हैं। पंजाब प्रान्त में रहने वाले वाल्मीकि ईसाई मत स्वीकार कर बड़ी संख्या में उस समय ईसाई बन गए क्योंकि उनके लिए मुस्लिम देश में हिन्दू बने रहना मौत को दावत देने के समान था। जबकि सिंध प्रान्त में रहने वाले कॉल, भील आदि दलित हिन्दू ही बने रहे। पिछले कुछ वर्षों में कट्टर इस्लाम का प्रभाव बढ़ने से गैर-मुस्लिम होने के नाते ईसाई बन चुके दलितों पर पाकिस्तान में अनेक अत्याचार हुए हैं। उन पर इस्लाम की बेज्जती का, कुरान के पन्ने फाड़ने का और मुहम्मद साहिब की शान में गुस्ताखी करने का आरोप लगाकर उन्हें जेल में डाल दिया जाता है और उनकी संपति लूट ली जाती हैं। यह सब पाकिस्तान के ।दजप ठ्सेंचीमउल कानून के अन्तर्गत किया जाता है। इस पर भी पाकिस्तान के मुसलमानों का मन नहीं भरा तो उन्होंने ईसाई गिरिजाघरों में बम विस्फोट करने आरम्भ कर दिए। बम धमाकों में कई सौ ईसाई दलित मारे जा चुके हैं।

पूर्वकाल में दलितों हिंदुओं की बेटियों को उठाना, उन्हें जबरदस्ती अपने हरम में बंधक बना लेना। मुस्लिम शासकों के लिए शौक पूरा करने जैसा था। मुसलमानों का यह शौक आज भी सिंध के मुस्लिम जमींदारों और रईसों को हैं। अपने खेतों में बंधुवा मजदूर के रूप में दलित हिंदुओं से कार्य लेने वाले मुस्लिम जमींदार उन्हें विपत्ति काल में थोड़ा से ऋण दे देते हैं। जो अनेक बार चुकाने के बाद में भी कभी पूरा नहीं होता। उसके बदले उनसे वे न केवल जीवन भर पीढ़ी दर पीढ़ी मजदूरी करवाते है अपितु उनकी बेटियों पर भी गन्दी नजर रखते हैं। अभी हाल ही में अनेक अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपा है कि सुन्दर दिखने वाली दलित हिन्दू लड़कियों को अमीर मुस्लिम जमींदार कर्जमाफी के बदले उठा लेता हैं। उसे प्रताड़ित कर इस्लाम स्वीकार करा निकाह कर अपने घर में नौकरानी बना कर रखता है। हिन्दू दलितों की सुनवाई करने वाला कोई नहीं होता। इस्लाम की समानता और सहिष्णुता के जमीनी दर्शन अगर दलित चिंतकों को करने हों तो पाकिस्तान के इस्लामिक शासन में जाकर देखें। अक्ल ठिकाने आ जाएगी। भारत में जितना दलित-मुस्लिम एकता का झुनझुना बजाते हैं। सब भूल जायेंगे।

दलित मुस्लिम एकता असंभव हैं। हमारे देश का इतिहास, इस्लाम की मान्यताएं, दलित संतों और सबसे बढ़कर डॉ. अम्बेडकर के चिंतन, वर्तमान में पाकिस्तान जैसे देश में दलितों की स्थिति देखकर यह स्पष्ट हो जाता है। अब भी दलित हिन्दू नहीं सुधरे तो उनका भविष्य घोर अंधकार का शिकार हो जायेगा। हिन्दुओं में पिछली एक शताब्दी में जातिवाद में बहुत कमी आयी है। जातिवाद को जड़ से मिटाने के लिए एक सवर्ण और दलित हिन्दुओं के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता हैं। इसलिए वोटबैंक और जातिवाद की राजनीति करने वाले नेताओं के झूठे वायदों का शिकार बने, अपनी बुद्धि का प्रयोग करें।

- हिन्दू जाति का हितचिंतक

प्रथम पृष्ठ का शेष

9 दिवसीय वैदिक साहित्य....

पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश का प्रमोशन करते महाशय धर्मपाल जी, श्री आनन्द कुमार चौहान जी, सभा की उप प्रधान श्रीमती मृदुला चौहान जी, श्रीमती उषा किरण आर्य जी, श्रीमती वीणा आर्या एवं अन्य मातृशक्ति

अंग्रेजी वेद का प्रमोशन करते सर्वश्री महाशय धर्मपाल जी, प्रेम अरोड़ा जी, सभा प्रधान धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री विनय आर्य जी, एस.पी. सिंह., मनोज गुलाटी, अरुण प्रकाश वर्मा, नरेन्द्र नारंग, राजकुमार आर्य एवं श्री वीरेन्द्र सरदाना

Continue from last issue :-

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Splendour of the Human Body - I

"Strength and wealth are my two arms; activity and heroism are my two hands; defending the weak is my breast as well as the strong desire of my Soul."

"Sweetness is my tongue; might is my speech; inspiration is my mind; sovereignty is my self-respect; delights aare my fingers; sports are my limbs; overcoming powe on evils is my companion".

"Glory is my head; fame, my face; valour, my hair; beare, mousstache and mastery constitute my breath; splendour is my vision and greatness, my hearing."

बाहू में बलमिन्द्रियँ हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम।। (Yv.xx.7)

जिह्वा मे भद्रं वाङ्. महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदाःऽ अङ्गलींगरलि मित्रं मे सहः।। (Yv.XX.6)

शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृतं सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।। (Yv.XX.5)

Bahu me balamindriyam hastau me karma viryam.

atma ksatramuro mama..

Jihva me bhadram vanmaho mano manyuh svarad bhamah.

modah pramoda anguliram gani mitram me sahad..

Siro me sriryaso mukham tvisih kesasca smasruni.

raja me prano amrtam samrat caksurvirat srotram..

Splendour of the Human Body - II

"Seven seers (Five organs of sense, mind and intellect) have always been working in our body. They are ever alert and guard it all the time with constant attention. Seven vital winds function for the self. Of them, the two selfless life-bestowers, the incoming and the outgoing breath protecting and sustaining my life never take rest."

"We have embarked on our journey a divine boat provided by our Lord. This remarkable boat, our physical body is well protected, spacious, bright, active, faultless, full of comforts well-designed, magnificentely built, flawless and leak- proof.

सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्। सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्न जौ सत्रसदौ च देवौ।। (Yv.XXXIV.55)

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माण मदितिँ सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमारुहे मा स्वस्तये।। (Yv.XXI.6)

Saptarsyah pratihitah sarire sapta raksanti sadamapram adam.

saptapah svapato lokamiy ustatra jagrto asvapnaju satrasadau ca devau.

Sutramanam prthivim dyamanehasam susarmanam aditim supranitim.

daivim navam svaritraman agasamasravantima ruhema svastaye..

May We Live amidst Divinities

There are two kinds of environment : divine and devilish. That which is straightforward is divine; the reverse is demoniacal. The demoniac is crooked, false and violent. All that is honest and without pretension is divine. Any attempt to take food through nostrils is abnormal and against naturality. One suffers in doing so. The celestial bodies in the sky move in proper direction and fixed speed. All such straight forwardness denotes a divinity. The divine is lawabiding, progressive and victorious. The devilish person moves backwards and ultimately is ruined. The verse says:

"May generosity of godly men and their friendship descend on us. May the benbevolent wisdom of the straightforward sages be ours. May the divinities be auspicious and besssstow on us happiness. May the bounties of Nature be the heaing elements for us. May the Lord Almighty continue to be our fuardian always for our wel-being. May we live ever amidst divintites, let us pray."

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयँ देवा नऽआयु : प्रतिरन्तु जीवसे।। (Yv.XXV.15)

Devanam bhadra sumati rrjuyatam devanam ratirabhi no nivartatam.

devanam sakhyamupase dima vaym deva na ayuh pratirantu jivase.

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 19 (अ)

महर्षि पाणिनि एवम् व्याकरण शास्त्र की अनुपम कृति अष्टाध्यायी

गतांक से आगे....

ये परिवर्तन भी दीर्घ, ह्रस्व, लोप, आगम, आदेश, गुण, वृद्धि आदि के विधान के रूप में ही देखे जाते हैं। अष्टम अध्याय में, वाक्यगत शब्दों के द्वित्वविधान, प्लुतविधान एवं षत्व और णत्वविधान का विशेषतः उपदेश है।

अष्टाध्यायी के अतिरिक्त उसी से संबंधित गणपाठ और धातुपाठ नामक दो प्रकरण भी निश्चित रूप से पाणिनि निर्मित थे। उनकी परम्परा आज तक अक्षुण्ण चली आती है, यद्यपि गणपाठ में कुछ नए शब्द भी पुरानी सूचियों में कालांतर में जोड़ दिए गए हैं। वर्तमान उणादि सूत्रों के पाणिनिकृत होने में संदेह है और उन्हें अष्टाध्यायी के गणपाठ के समान अभिन्न अंग नहीं माना जा सकता। वर्तमान उणादि सूत्र शाकटायन व्याकरण के ज्ञात होते हैं।

परिचय : पाणिनि ने संस्कृत भाषा के तत्कालीन स्वरूप को परिष्कृत एवं नियमित करने के उद्देश्य से भाषा के विभिन्न अवयवों एवं घटकों यथा ध्वनि-विभाग (अक्षरसमाम्नाय), नाम (सञ्ज्ञा, सर्वनाम, विशेषण), पद, क्रिया, वाक्य, लिङ्ग इत्यादि तथा उनके अन्तर्सम्बन्धों का समावेश अष्टाध्यायी के 32 पादों में, जो आठ अध्यायों में समान रूप से विभक्त है, किया है।

व्याकरण के इस महनीय ग्रन्थ में पाणिनि ने विभक्ति-प्रधान संस्कृत भाषा के विशाल कलेवर का समग्र एवं सम्पूर्ण विवेचन लगभग 4000 सूत्रों में किया है, जो आठ अध्यायों में संख्या की दृष्टि से असमान रूप से विभाजित हैं। तत्कालीन समाज में लेखन सामग्री की दुष्प्राप्यता को ध्यान में रखकर पाणिनि ने व्याकरण को स्मृतिगम्य बनाने के लिए सूत्र शैली की सहायता ली है। पुनः, विवेचन को अतिशय संक्षिप्त बनाने हेतु पाणिनि ने अपने पूर्ववर्ती वैयाकरणों से प्राप्त उपकरणों के साथ-साथ स्वयं भी अनेक उपकरणों का प्रयोग किया है जिनमें शिवसूत्र या माहेश्वर सूत्र सबसे महत्वपूर्ण हैं। प्रसिद्ध है कि महर्षि पाणिनि ने इन सूत्रों को देवाधिदेव शिव से प्राप्त किया था।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्त्तुकामोसनकादिसिद्धादिनेत द्विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा के सभी शब्दों के निर्वचन के लिए करीब 4000 सूत्रों की रचना की जो अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों में वैज्ञानिक ढंग से संगृहीत हैं। ये सूत्र वास्तव में गणित के सूत्रों की भाँति हैं। जिस तरह से जटिल एवं विस्तृत गणितीय धारणाओं अथवा सिद्धान्तों को सूत्रों द्वारा सरलता से व्यक्त किया जाता है, उसी तरह पाणिनि ने सूत्रों द्वारा अत्यन्त संक्षेप में ही व्याकरण के जटिल नियमों को स्पष्ट कर दिया है। भाषा के समस्त पहलुओं के विवेचन हेतु ही उन्हें 4000 सूत्रों की रचना करनी पड़ी।

पाणिनि ने अष्टाध्यायी में प्रकरणों तथा तद्सम्बन्धित सूत्रों का विभाजन वैज्ञानिक रीति से किया है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी को दो भागों में बाँटा है। प्रथम अध्याय से लेकर आठवें अध्याय के प्रथम पाद तक को सपादसप्ताध्यायी एवं शेष तीन पादों को त्रिपादी कहा जाता है। पाणिनि ने पूर्वत्राऽसिद्धम् (8-2-1) सूत्र बनाकर निर्देश दिया है कि सपादसप्ताध्यायी में विवेचित नियमों (सूत्रों)की तुलना में त्रिपादी में वर्णित नियम असिद्ध हैं। अर्थात्, यदि दोनों भागों में वर्णित नियमों के मध्य यदि कभी विरोध हो जाए तो पूर्व भाग का नियम ही मान्य होगा। इसी तरह, सपादसप्ताध्यायी के अन्तर्गत आने वाले सूत्रों (नियमों) में भी विरोध दृष्टिगोचर होने पर क्रमानुसार परवर्ती (बाद में आने वाले) सूत्र का प्राधान्य रहेगा - विप्रतिषेधे परं कार्यम्। इन सिद्धान्तों को स्थापित करने के बाद, पाणिनि ने सर्वप्रथम संज्ञा पदों को परिभाषित किया है और बाद में उन संज्ञा पदों पर आधारित विषय का विवेचन।

संक्षिप्तता बनाए रखने के लिए पाणिनि ने अनेक उपाय किए हैं। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है - विशिष्ट संज्ञाओं का निर्माण। व्याकरण के नियमों को बताने में भाषा के जिन शब्दों/अक्षरों समूहों की बारम्बार आवश्यकता पड़ती थी, उन्हें पाणिनि ने एकत्र कर विभिन्न विशिष्ट नाम दे दिया जो संज्ञाओं के रूप में अष्टाध्यायी में आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रसंगों में प्रयुक्त किए गए हैं। नियमों को बताने के पहले ही पाणिनि वैसी संज्ञाओं को परिभाषित कर देते हैं, यथा माहेश्वर सूत्र- प्रत्याहार, इत्, टि, नदी, घु, पद, धातु, प्रत्यय, अङ्ग, निष्ठा इत्यादि। इनमें से कुछ को पाणिनि ने अपने पूर्ववर्ती वैयाकरणों से उधार लिया है। लेकिन अधिकांश स्वयं उनके द्वारा बनाए गए हैं। इन संज्ञाओं का विवरण आगे दिया गया है।

व्याकरण के कुछ अवयवों यथा धातु, प्रत्यय, उपसर्ग के विवेचन में, पाणिनि को अनेक नियमों (सूत्र) की आवश्यकता पड़ी। ऐसे नियमों के निर्माण के पहले, प्रारम्भ में ही पाणिनि उन सम्बन्धित अवयवों का उल्लेख कर बता देते हैं कि आगे एक निश्चित सूत्र तक इन अवयवों का अधिकार रहेगा। इन अवयवों को वे पूर्व में ही संज्ञा रूप में परिभाषित कर चुके हैं। दूसरे शब्दों में पाणिनि प्रकरण विशेष का निर्वचन उस प्रकरण की मूलभूत संज्ञा यथा धातु, प्रत्यय इत्यादि के अधिकार (Coverage) में करते हैं जिससे उन्हें प्रत्येक सूत्र में सम्बन्धित संज्ञा को बार-बार दुहराना नहीं पड़ता है। संक्षिप्तता लाने में यह उपकरण बहुत सहायक है।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

आर्य समाज खेड़ाअफगान में कम्बल वितरित

वैदिक संस्कृति न्यास सहारनपुर की ओर से आर्य समाज खेड़ाअफगान में 18 दिसम्बर को निर्धन एवं असहाय लोगों को कम्बल वितरित किये गये। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष आदित्य प्रकाश गुप्त ने कहा कि न्यास का मूल उद्देश्य वैदिक संस्कृति के प्रचार के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में कार्य करना भी है। 23 दिसम्बर को आर्यसमाज खेड़ाअफगान (सहारनपुर) की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। इस अवसर पर अमित आर्य ने अपने भावुक भजनों से सभी को भावविभोर कर दिया।

-डॉ. अशोक कुमार

दिव्यांगों को कम्बल शॉल बांटे

दिव्यांग भी समाज के अभिन्न अंग हैं। इनकी सेवा सहायता समाज के सभी वर्गों को करनी चाहिए। यथा सभ्य व दिव्यांगों को किसी भी रूप में प्रदान करें।

उक्त विचार आर्य विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार ने आर्यसमाज व पंजाबी समाज की ओर से विभिन्न स्थानों पर कम्बल-शॉल वितरित करते हुए 10 जनवरी, 2017 को व्यक्त किये।

अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में अग्निमित्र शास्त्री, आर.सी. आर्य, जे.एस. दुबे, ओमप्रकाश तापड़िया, पूनम चड्ढा, सीमा पिपलानी, सागर पिपलानी, ओमप्रकाश गुलाटी आदि के अलग-अलग जगह कम्बल-शॉल दिव्यांगों को बांटे।

- अर्जुनदेव चड्ढा, जिला प्रधान

केन्द्रीय कारागार कोटा में वैदिक आध्यात्मिक सत्संग

आत्मचिंतन कर जीवन का सुधार करें। अपने अंदर श्रेष्ठ विचारों को उत्पन्न करें जिससे श्रेष्ठ कर्म करते हुए जीवन को बेहतर बनाया जा सके। ये विचार केन्द्रीय कारागार कोटा में आर्य समाज के वैदिक आध्यात्मिक संत्संग में वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार ने जेल में कैदियों को संबोधित करते हुए 7 जनवरी, 2017 को व्यक्त किए। इस अवसर पर हाड़ौती के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री एवं एवं जिला सभा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। जेएस दुबे ने जेल प्रशासन का आभार प्रकट किया।

- ओम प्रकाश तापड़िया

सभा द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर वर्ष 2017

मूल्य 1200/-रुपये सैकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग , दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

आवश्यकता है

आर्यसमाज अशोक नगर में संचालित होम्योपैथ चिकित्सालय के लिए एक डॉक्टर की आवश्यकता है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

-श्री प्रकाश चन्द्र आर्य, प्रधान, मो. 09212175772

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

शोक समाचार

श्री विशम्भरनाथ भाटिया नहीं रहे

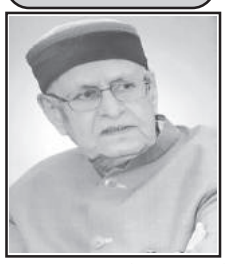

पूर्वी दिल्ली आर्यसमाज के स्तम्भ, दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार के संस्थापक अध्यक्ष श्री विशम्भरनाथ भाटिया जी का 7 जनवरी, 2017 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 10 जनवरी, 2017 को दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार में सम्पन्न हुई जिसमे सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

सुश्री उर्मिला राजोत्या का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अनन्य सहयोगी सुश्री उर्मिला जी राजोत्या का 1 जनवरी, 2017 को जयपुर में निधन हो गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा ऋषि उद्यान, अजमेर (राज.) में 3 जनवरी, 2017 को सम्पन्न हुई।

श्री राकेश आर्य जी को मातृशोक

आर्यसमाज सुदर्शन पार्क, नई दिलली के मन्त्री श्री राकेश आर्य जी की पूज्य माता श्रीमती सुशीला देवी जी निधन हो गया। वे अपने पीछे दो पुत्रों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 12 जनवरी, 2017 को सनातन धर्म सभा मन्दिर मोती नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवती अनेक आर्यसमाजों अधिकारियों एवं सदस्यों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

29.	आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा श्री पदमचन्द आर्य, गुरुग्राम	2100	
30.	आर्यसमाज सागरपुर	2100	
31.	श्री आनन्द कुमार आर्य (कॉम्पोटॉम इण्डिया लिमि.)	10000	
32.	श्री राजपाल आर्य, नरेला	500	
33.	श्री आर. के. तनेजा (तनेजा फाउंडेशन) ग्रे.कै.-1	10000	
34.	आर्यसमाज नरेला	2000	
35.	श्री सतीशचन्द्र सक्सेना	5000	
36.	श्री निशान्त आर्य, छपरौली	100	
37.	आर्यसमाज सुन्दर विहार	11000	
38.	आर्यसमाज सरीता विहार	2000	

- क्रमशः

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून

(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

मोबाइल ट्यून - रिंग टोन/कॉलर ट्यून को कई बार हम व्यक्ति विशेष की पहचान के लिए प्रयोग करते हैं। वहां हमारी कॉलर टयून/रिंग टोन ही हमारी पहचान होती है। तो आइए हम मिलकर अपने आपको महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज को समर्पित करें और अपने मोबाईल में ऐसी ट्यून सैट करें कि आस-पास खड़ा कोई भी व्यक्ति हमें जान जाए कि हम आर्यसमाज के सदस्य हैं, महर्षि दयान्द सरस्वती जी के मानस पुत्र हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयासों को कुछ सुप्रसिद्ध गीतों की ट्यन बनवाई गई है जोकि अनेक मोबाइल कम्पनियों द्वारा स्वीकार की गई हैं। आइए हम अपने पसन्दीदा गीत को अपनी पहचान बनाएं। नीचे दिए गए गीतों में से किसी भी गीत को अपनी ट्यून बनाने के लिए अपनी मोबाईल कम्पनी के निर्देशानुसार डायल/एस.एम.एस. करें। गीतों के चयन के लिए सभा की वैबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर लॉगऑन करें अथवा **http://www.binacatunes.com/Home/Search_?keyword=dev+dayanand** पर क्लिक करें। उपलब्ध गीत इस प्रकार हैं-

अब रस्ता कर दो खाली, आई फौज दयानन्द वाली.....
हे प्रभु हम तुझसे वर पावें, सकल विश्व को आर्य बनावें.....
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते हैं.....
हमको सब दुनिया जाने, हैं वीर दयानन्द के.....
जो होली सो होली, भुला दो उसे आज मिलने मिलाने.....
पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए .....
सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों, सुनो बात अनमोली.....
यूं तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में, नहीं गुरुदेव दयानन्द सा....

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12/13 जनवरी, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 जनवरी 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की
अमूल्य देन उर्दू भाषियों के लिए
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश

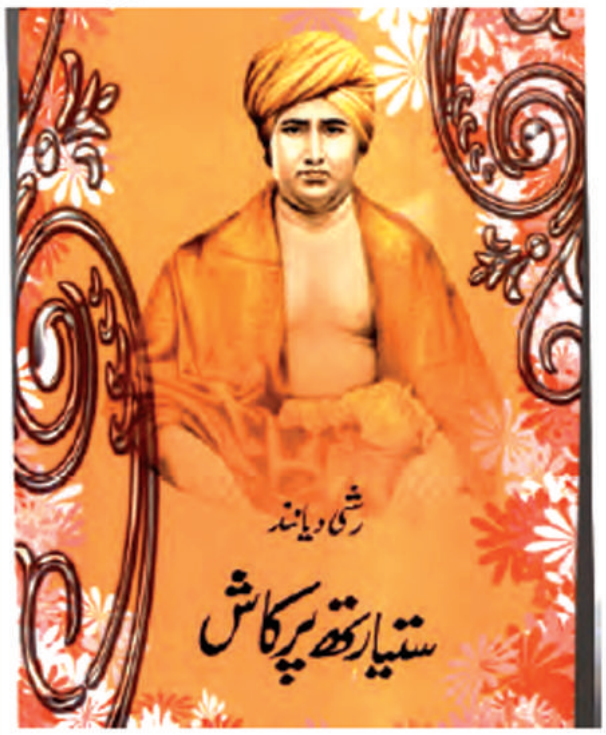

प्राप्ति स्थान:- वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की साधारण सभा बैठक का आयोजन

बुधवार 18 जनवरी, 2017 प्रात: 9:30 बजे
स्थान : एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिमी, नई दिल्ली-26

समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विशेष आमन्त्रित सदस्यों एवं दिल्ली स्थित सभी सम्बद्ध/असम्बद्ध आर्य विद्यालयों के प्रधान, प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्य महानुभावों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में भागीदारी प्रस्तुत करें।

- सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता (9810855695)

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

बुधवार 25 जनवरी, 2017 प्रात: 9:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन 25 जनवरी, 2017 को प्रात: 9:30 बजे सभी विद्यालयों में किया जाना निश्चित किया गया है। अत: समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्य महानुभावों से निवेदन है कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेजे दें अथवा 18 जनवरी की बैठक में साथ लेकर आएं, जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

- सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता (9810855695)

ओ३म्
विवाह योग्य लड़के-लड़कियों
का पंजीकरण करायें।

विवाह सम्बन्ध सेवायें
(प्रतिदिन)
प्रात: 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक
सायं 2:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक
लड़का/लड़की की फोटो व आधार कार्ड साथ लेकर आयें
आर्यसमाज कीर्तिनगर
(दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित)
ए-37, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
✆ 011-25158107, 9313013123

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह